Your Imagination, we Print...
JGP
JAY graphics & printers
COMMERCIAL PRINTERS
C-15 VIKRAM CHAMBARS, NR.INCOME TAX OFFICE, ASHRAM ROAD, AHMEDABAD.
Ph. : 93288 95485

Regd.RNI.No. GUJHIN/2016/72566
GANDHINAGAR

पाटनगर उदय

प्रधान सम्पादक : ईलेवान एच. ठाकर
मो.नं. : 99784 07016

सह सम्पादक : सुरेश के. मालाणी
मो.नं. 97269 63888

• वर्ष : 10 • अंक : 299 • दिनांक :- 04-08-2026, TUESDAY • पेज 4+4 मुल्य: 0.90/- (Paisa) • वार्षिक शुल्क : 280/-

'पाटनगर उदय'
दैनिक समाचार पत्र में समाचार, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिये
सम्पर्क करें : गांधीनगर कार्यालय
403, अखबार भवन, सेक्टर-11, गांधीनगर- 382011.
अहमदाबाद कार्यालय : 4, अवनी हाउस, मिठाखली रेलवे क्रॉसिंग के पास, मिठाखली गाम, अहमदाबाद - 380006.
मोबाईल नं. : 93288 95485
email:- patnagaruday@gmail.com

कार्यवाहक सम्पादक : कनकभाई पंड्या •Published at 1-503, Pramukh Aura, Nr. Pramukh Nagar Bunglows, Pramukh Nagar Road, Kh-0 Road, Sargasan Char Rasta, GANDHINAGAR (GUJ) • email :- patnagaruday@gmail.com

सीमा पर भारत का 45,000 करोड़ रुपये का बड़ा प्लान

चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के पास रेलवे नेटवर्क मज़बूत किया जाएगा

एजेंसी - नई दिल्ली,

भारत अपनी सीमाओं को एक मज़बूत सुरक्षा कवच से लैस करने जा रहा है। इससे न सिर्फ़ सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले आम लोगों की ज़िंदगी बदलेगी, बल्कि भारतीय सेना भी बहुत आसानी से और कम समय में सीमा पर टैंक और तोपें तैनात कर सकेगी। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश से सटे बेहद संवेदनशील सीमावर्ती इलाकों में अपने रेलवे नेटवर्क को मज़बूत करेगा। इसके लिए 45,000 करोड़ रुपये (5 अरब डॉलर) की भारी-भरकम रकम खर्च की जाएगी।

सीमावर्ती इलाकों में रेलवे नेटवर्क को मज़बूत करने के लिए यह बड़ी रकम अगले 18 से 24 महीनों में खर्च की जाएगी। पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम और पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में नई रेलवे लाइनें बिछाई जाएंगी, प्लेटफॉर्म को आधुनिक बनाया जाएगा और पूरे नेटवर्क को दोहरे इस्तेमाल (dual-use) के लायक बनाया जाएगा। नाम न बताने की शर्त पर सूत्रों ने कहा कि सीमावर्ती राज्यों के लिए प्रस्तावित 5 अरब डॉलर का यह प्लान अगले दो सालों में रेलवे के लिए कुल इंफ्रास्ट्रक्चर खर्च का लगभग 22त्न है। इससे इस प्लान की अहमियत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

इस रणनीतिक प्लान का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि इसे %दोहरे इस्तेमाल वाले इंफ्रास्ट्रक्चर% के तौर पर तैयार किया जा रहा है। इसकी वजह से, किसी भी तरह का तनाव होने पर हिमालय, लद्दाख, सिलीगुड़ी कॉरिडोर और पूर्वोत्तर के दूर-दराज़ इलाकों में भारी हथियार, राशन और सैनिकों को पहुँचाने में सेना का जो समय लगता है, वह आधा हो जाएगा। इसके अलावा, दूर-दराज़ सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले लोगों को हर मौसम में आने-जाने की अच्छी सुविधाएँ मिलेंगी। इससे व्यापार, रोज़गार और पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ भारत के रिश्ते अभी बहुत संवेदनशील दौर में हैं। हालाँकि अभी स्नष्ट (लाइन ऑफ़ एक्चुअल कंट्रोल) पर चीन के साथ कोई तनाव नहीं है, लेकिन उसकी गतिविधियाँ अभी भी जारी हैं। पाकिस्तान के साथ सीमा पर तनाव बना हुआ है। अब, 2024 के बाद बांग्लादेश में बनी राजनीतिक स्थिति ने भी पूर्वी सीमा पर नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। ऐसे में, भारत अपने पड़ोसी देशों को एक कड़ा संदेश देना चाहता है। इसके लिए वह एक मज़बूत रेलवे नेटवर्क बना रहा है जो हर मौसम में उसकी मिलिट्री पोस्ट तक काम कर सके।

2017 में डोकलाम विवाद के बाद से चीन ने तिब्बत और भारत की सीमाओं के पास तेज़ी से एयरपोर्ट, हेलीपैड और रेलवे लाइनें बनाई हैं। इससे उसकी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (क्क्र) के लिए तेज़ी से आवाजाही करना आसान हो गया है। भारत की 45,000 करोड़ रुपये की यह योजना चीन की इन चुनौतीपूर्ण तैयारियों का सीधा जवाब है। भारत पहले ही कश्मीर में दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज बना चुका है।

पिछले दशक में, सरकार ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में लगभग 1,700 किलोमीटर नई रेलवे लाइनें बिछाई हैं। भारत ने अपने पूर्वोत्तर क्षेत्रों में एयर इंफ्रास्ट्रक्चर को भी फिर से चालू किया है। इसमें कुछ ऐसी एयरसाइड सुविधाएं शामिल हैं जो 1962 से बंद पड़ी थीं और अब उन्हें हेलीकॉप्टर और मिलिट्री एयरक्राफ्ट के इस्तेमाल के लिए तैयार किया जा रहा है। अब इस नई बड़ी योजना से भारत की सीमाएं और मज़बूत और सुरक्षित हो जाएंगी।

20 सितंबर से 4 अक्टूबर तक कई ट्रेनें रद्द रहेंगी

एजेंसी - नई दिल्ली,

रेलवे यात्रियों के लिए एक ज़रूरी खबर सामने आई है। ईस्ट सेंट्रल रेलवे द्वारा बिहार में मोकामा के पास गंगा नदी पर बने नए रेलवे ब्रिज को डबल लाइन से जोड़ने के काम के कारण, 20 सितंबर से 4 अक्टूबर, 2026 तक कई ट्रेनें रद्द और डायवर्ट (मार्ग परिवर्तन) की जाएंगी। रेलवे प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि वे यात्रा करने से पहले अपनी ट्रेन की स्थिति (स्टेटस) ज़रूर देख लें। रेलवे के अनुसार, मोकामा के पास नए रेलवे ब्रिज और बरौनी जंक्शन के बीच मुख्य लाइन को अपग्रेड करने के लिए नॉन-इंटरलॉकिंग का काम किया जाएगा। इस तकनीकी काम के कारण लंबी दूरी की कई एक्सप्रेस और पैसेंजर ट्रेनों की आवाजाही प्रभावित होगी। रद्द होने वाली ट्रेनों में वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी-आसनसोल स्पेशल और हावड़ा-जयनगर एक्सप्रेस जैसी कई महत्वपूर्ण ट्रेनें शामिल हैं। इसके अलावा, कई ट्रेनों के रूट भी बदले गए हैं। रेलवे द्वारा घोषित कार्यक्रम के अनुसार, 20 सितंबर को 6 ट्रेनें, 21 सितंबर को 12, 22 सितंबर को 13, 23 सितंबर को 15, 24 सितंबर को 21, 25 सितंबर को 24, 26 सितंबर को 29, 27 सितंबर को 31, 28 सितंबर को 21, 29 सितंबर को 20, 30 सितंबर को 25, 1 अक्टूबर को 32, 2 अक्टूबर को 32, 3 अक्टूबर को 36 और 4 अक्टूबर को 21 ट्रेनें रद्द रहेंगी।

इसके अलावा, 384 ट्रेनें वैकल्पिक रूट पर चलेंगी, जबकि 56 ट्रेनें अपने गंतव्य (मंज़िल) तक पहुंचने से पहले ही रोक दी जाएंगी और 67 ट्रेनें दूसरे स्टेशनों से अपनी यात्रा शुरू करेंगी।

रेलवे प्रशासन ने यात्रियों को सलाह दी है कि वे यात्रा शुरू करने से पहले INRJ/DGEG पोर्टल या रेलवे के आधिकारिक चैनलों पर अपनी ट्रेन की ताज़ा स्थिति देख लें। इसके अलावा, यात्री रेलवे हेल्पलाइन 139 पर संपर्क करके ट्रेन से जुड़ी जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं। उम्मीद है कि नया पुल बनने के बाद इस रूट पर ट्रेनों का संचालन तेज़, सुरक्षित और अधिक कुशल हो जाएगा।

गंभीर अपराधों के आरोपियों को कोई राहत नहीं, दूसरे मामलों में कार्रवाई पर राज्य सरकारें फैसला ले सकती हैं

एजेंसी - नई दिल्ली,

सुप्रीम कोर्ट ने विरोध प्रदर्शनों के दौरान दर्ज अपराधों से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए अपने पिछले आदेश में एक अहम स्पष्टीकरण दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि गंभीर और जघन्य अपराधों के आरोपियों को कोई राहत नहीं दी जाएगी, जबकि अन्य मामलों में राज्य सरकारें कानून के अनुसार कार्रवाई जारी रखने या उसे वापस लेने का फैसला करने के लिए स्वतंत्र होंगी।

कोर्ट ने स्पष्ट किया कि पिछले आदेश में इस्तेमाल किया गया आपराधिक बैकग्राउंड शब्द केवल हत्या और बलात्कार जैसे गंभीर अपराधों के आरोपियों के संदर्भ में इस्तेमाल किया गया था। सामान्य आरोपों या विरोध प्रदर्शनों से जुड़े छोटे-मोटे अपराधों के मामलों में, हर मामले की परिस्थितियों के आधार पर फैसला लिया जा सकता है।

सुनवाई के दौरान, केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि गंभीर अपराधों में शामिल लोगों के खिलाफ दर्ज मामले वापस नहीं लिए जाएंगे।

उन्होंने कोर्ट को बताया कि ऐसे आरोपियों की एक अलग सूची तैयार की गई है और सरकार पहले किए गए वादे के अनुसार कार्रवाई कर रही है।

सुनवाई के दौरान, याचिकाकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शनों के दौरान पुलिस की कार्रवाई, बल प्रयोग, निगरानी के तरीकों और अन्य मुद्दों को लेकर कई सवाल उठाए। कुछ वकीलों ने पुलिस की कार्रवाई की स्वतंत्र जांच की मांग की और संबंधित अधिकारियों से हलफनामा भी मांगा।

सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार और संबंधित राज्य सरकारों को जरूरी हलफनामे दाखिल करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने उन्हें पुलिस कार्रवाई और अन्य प्रशासनिक फैसलों सहित कई मुद्दों पर विस्तृत जवाब दाखिल करने का भी निर्देश दिया है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि इस मामले की अगली सुनवाई 19 अगस्त को होगी। उस समय, कोर्ट केंद्र और राज्यों द्वारा उठाए गए कदमों, मामलों की स्थिति और दाखिल किए गए हलफनामों की समीक्षा करेगा। कोर्ट ने इस बात पर जोर दिया कि गंभीर अपराधों और सामान्य विरोध प्रदर्शनों से जुड़े मामलों के बीच स्पष्ट अंतर रखते हुए कानून के अनुसार फैसला लिया जाएगा।

समय पर बचाव कार्य से बड़ा हादसा टला

बिहार के सहरसा में एक पैसेंजर ट्रेन में लगी भीषण आग

एजेंसी - बिहार

सोमवार सुबह बिहार के सहरसा जिले के सिमरी बख्तियारपुर रेलवे स्टेशन पर एक पैसेंजर ट्रेन में भीषण आग लग गई, जिससे कुछ देर के लिए अफरातफरी मच गई। हालांकि, रेलवे प्रशासन और फायर ब्रिगेड की त्वरित कार्रवाई से एक बड़ा हादसा टल गया। सभी यात्रियों को समय रहते सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया और किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

मिली जानकारी के अनुसार, समस्तीपुर-सहरसा पैसेंजर ट्रेन (नंबर 63344) में सुबह करीब 3ञ्40 बजे आग लग गई। आग ट्रेन के इंजन और उससे जुड़े एक कोच में लगी थी। आग तेजी से फैली, जिससे स्टेशन पर मौजूद यात्रियों में दहशत फैल गई।

घटना की सूचना मिलते ही रेलवे अधिकारी और फायर ब्रिगेड की टीमें तुरंत मौके पर पहुंच गईं।

आग बुझाने के लिए सहरसा फायर स्टेशन से फोम टेंडर और पानी के टैंकर भेजे गए। काफी मशक्कत के बाद आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया।

फायर ब्रिगेड के अधिकारियों ने बताया कि समय पर बचाव कार्य के कारण सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। हालांकि, आग की घटना में ट्रेन का एक कोच पूरी तरह जलकर खाक हो गया। गनीमत रही कि कोई यात्री या रेलवे कर्मचारी घायल नहीं हुआ।

हालांकि, रेलवे सिस्टम और फायर डिपार्टमेंट की त्वरित कार्रवाई के कारण एक बड़ा हादसा टल गया

आग लगने का सही कारण अभी स्पष्ट नहीं है। रेलवे प्रशासन ने पूरी घटना की उच्च स्तरीय जांच शुरू कर दी है। जांच के बाद ही आग लगने का असली कारण पता चल सकेगा और आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

पोर्टलैंड और इडाहो में कुल 4 लोगों की मौत, कई घायल

एजेंसी - वॉशिंगटन,

अमेरिका में गोलीबारी की दो अलग-अलग घटनाओं ने एक बार फिर चिंता बढ़ा दी है। स्थानीय अधिकारियों के अनुसार, पोर्टलैंड (ओरेगन) और ट्विन फॉल्स (इडाहो) में हुई गोलीबारी में कुल चार लोगों की मौत हो गई है, जबकि सात लोग घायल हुए हैं। संबंधित पुलिस विभागों द्वारा दोनों घटनाओं की जांच की जा रही है।

रविवार को पोर्टलैंड के नॉर्थईस्ट अल्बर्टा स्ट्रीट इलाके में गोलीबारी की एक घटना हुई। पुलिस को घटना की सूचना मिली और एक टीम तुरंत मौके पर पहुंची। शुरुआत में दो घायल लोग मिले, लेकिन बाद में पता चला कि इलाज के लिए पांच अन्य लोगों को भी अस्पताल ले जाया गया था। इस घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई है, जबकि पांच लोगों का इलाज चल रहा है।

पोर्टलैंड पुलिस ने कहा है कि गोलीबारी का संदिग्ध अभी भी फरार है और उसकी तलाश जारी है। होमिसाइड यूनिट (हत्या मामलों की जांच करने वाली इकाई) घटना की जांच कर रही है और घटना के बारे में जानकारी रखने वाले लोगों से आगे आने की अपील की गई है।

दूसरी ओर, इडाहो के ट्विन फॉल्स शहर में एक रेस्तरां में हुई गोलीबारी में तीन लोगों की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों के अनुसार, गोलीबारी स्थानीय समयानुसार दोपहर में शुरू हुई। घटना के बाद पूरे इलाके में सुरक्षा बढ़ा दी गई है। दोनों घटनाओं के पीछे का मकसद फिलहाल स्पष्ट नहीं है। जांच एजेंसियां ? ?घटनास्थल पर मिले सबूतों, गवाहों के बयानों और अन्य जानकारियों के आधार पर अपनी जांच जारी रखे हुए हैं।

स्कूलों के बाद अब लाल किले और मेयर ऑफिस को निशाना बनाने वाले ईमेल के बाद सुरक्षा बढ़ाई गई

एजेंसी - नई दिल्ली,

दिल्ली के स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद, अब लाल किले और दिल्ली के मेयर ऑफिस को निशाना बनाने वाला धमकी भरा ईमेल मिलने पर सुरक्षा एजेंसियों को अलर्ट कर दिया गया है। ईमेल मिलते ही दोनों जगहों पर सुरक्षा कड़ी कर दी गई और पुलिस ने गहन जांच की है।

पुलिस के मुताबिक, धमकी भरे ईमेल में लाल किले और मेयर ऑफिस को उड़ाने की बात कही गई थी। हालांकि, शुरुआती जांच में अब तक कोई संदिग्ध वस्तु या विस्फोटक सामग्री नहीं मिली है और फिलहाल इस धमकी को झूठा माना जा रहा है।

फिर भी, सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत जांच जारी है।

इससे पहले सोमवार को दिल्ली के कई स्कूलों को भी इसी तरह के धमकी भरे संदेश मिले थे। इसके बाद पुलिस, बम निरोधक दस्ते और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने स्कूलों की कक्षाओं, शौचालयों और पूरे परिसर की गहन तलाशी ली, लेकिन कोई खतरनाक सामग्री नहीं मिली।

पुलिस के मुताबिक, धमकी भेजने वाले व्यक्ति ने ईमेल में कहा है कि वह एक आतंकवादी संगठन से जुड़ा है। इस दावे की भी जांच की जा रही है और ईमेल के स्त्रोत तक पहुंचने की कोशिश की जा रही है।

स्वतंत्रता दिवस नजदीक होने के कारण राजधानी दिल्ली में सुरक्षा व्यवस्था पहले ही कड़ी कर दी गई है। पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि वे अफवाहों से दूर रहें, केवल आधिकारिक जानकारी पर भरोसा करें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें।

संपादकीय

ऑपरेशन तूफ़ान

पिछले कुछ सालों में, केरल में ऐसे युवाओं की संख्या बढ़ी है जो खुद ड्रग्स की लत के शिकार हैं और प्रतिबंधित साइकोट्रोपिक पदार्थों की तस्करी कर रहे हैं। राज्य में ड्रग की लत बढ़ने के संकेत एक दशक पहले शराब पर प्रतिबंध लगने के बाद ही दिखने लगे थे। हालाँकि, यह समस्या तब और गंभीर हो गई जब ड्रग डीलर कानून लागू करने वाली एजेंसियों से बचने के लिए डिजिटल टेक्नोलॉजी और सोशल मीडिया का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करने लगे। अब दक्षिण के दूसरे राज्य भी इस जानलेवा लत की चपेट में आ रहे हैं। रोज़गार ज़रूरी है, लेकिन मानसिक स्वास्थ्य के लिए सही समय पर रोज़गार मिलना ज़्यादा ज़रूरी है। रोज़गार न होने के कारण युवा भटकने लगते हैं। इसी भटकाव के दौरान वे ड्रग तस्करों का शिकार बन जाते हैं। ड्रग माफिया के काम करने के तरीके के अनुसार, पहले खाली बैठे और भटकते युवाओं को अच्छी नौकरी का लालच दिया जाता है। फिर असली खेल शुरू होता है। उन्हें कूरियर जैसा डिलीवरी का काम सौंपा जाता है, जिसके बदले उन्हें पैसे मिलने लगते हैं। जैसे-जैसे वे इस गंदे धंधे में फंसते जाते हैं, वे खुद भी ड्रग्स लेने लगते हैं। यहीं से एक खतरनाक दुष्चक्र शुरू होता है। जहाँ कोविड-19 से प्रभावित 2020-21 के दौरान राज्य में दर्ज ह्ष्ठक्र मामलों की संख्या में कमी आई थी, वहीं 2021 में 5,695 से बढ़कर 2022 में यह संख्या 26,619 हो गई। 2025 में यह संख्या फिर बढ़कर 36,314 हो गई और तस्करी का भारी सामान ज़ब्त किया गया। इसमें राज्य की कमर्शियल राजधानी एर्नाकुलम शहर का बड़ा हिस्सा है। कई एजेंसियों की कोशिशों के बावजूद सफलता सीमित ही रही है। ष्ठस्न सरकार ने जून में %ऑपरेशन तूफ़ान% शुरू करके अपने ड्रग-विरोधी अभियान को व्यवस्थित और समन्वित करने की कोशिश की।

इस पहल के तहत, राज्य पुलिस ने दक्षिण के राज्यों की पुलिस फोर्स, केंद्रीय एजेंसियों और राज्य के शिक्षा, स्वास्थ्य और आबकारी विभागों के साथ मिलकर काम किया। लेकिन नतीजे काफी औसत रहे हैं। दूसरी ओर, ड्रग माफिया खूब पैसा कमा रहे हैं और उनका अंडरग्राउंड नेटवर्क लगातार फैल रहा है। सरकार की ड्रग-विरोधी कार्रवाई कछुए की चाल से चल रही है और माफिया तेंदुए की रफ़्तार से काम कर रहे हैं। कभी पंजाब का भी यही हाल था।

आज, केमिकल फर्टिलाइज़र वाले गेहूं के कारण पंजाब में कैंसर का प्रसार अकल्पनीय रूप से बढ़ गया है।

इंटरनेशनल मैथमेटिक्स प्रतियोगिता (IMC-2026) में भारत की ऐतिहासिक उपलब्धि – तीन स्वर्ण पदक और एक रजत पदक के साथ विश्व मंच पर भारतीय प्रतिभा का परचम

अहमदाबाद,

भारत के लिए अत्यंत गौरव और हर्ष का विषय है कि बुल्गारिया के ब्लागोएवग्राद में 29 एवं 30 जुलाई, 2026 को आयोजित इंटरनेशनल मैथमेटिक्स प्रतियोगिता (IMC) फॉर यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स-2026 में भारतीय टीम ने शानदार सफलता प्राप्त की है। विश्व के अनेक देशों के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों के बीच भारत के चारों प्रतिभागियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तीन स्वर्ण पदक तथा एक रजत पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया है।

इंटरनेशनल मैथमेटिक्स प्रतियोगिता (IMC) विश्व की सबसे प्रतिष्ठित स्नातक स्तर की गणित प्रतियोगिताओं में से एक है। इसमें विश्व के अग्रणी विश्वविद्यालयों के मेधावी विद्यार्थी भाग लेते हैं। प्रतियोगिता में बीजगणित, विश्लेषण, ज्यामिति तथा कॉम्बिनेटोरिक्स जैसे विषयों पर आधारित अत्यंत चुनौतीपूर्ण प्रश्नों के माध्यम से प्रतिभागियों की गणितीय क्षमता,

तार्किक सोच और रचनात्मक समस्या-समाधान कौशल का मूल्यांकन किया जाता है। भारतीय टीम का उत्कृष्ट प्रदर्शन

भव्य तिवारी (तृतीय वर्ष, बी.टेक. कंप्यूटर साइंस, IIT बॉम्बे) ने 100 में से 79 अंक, विश्व रैंक 10 से 12 प्राप्त कर स्वर्ण पदक तथा ग्रैंड फर्स्ट प्राइज हासिल किया।

शौनक कर (तृतीय वर्ष, B.Stat., इंडियन स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट, कोलकाता) ने 65 अंक, विश्व रैंक 40 से 46 प्राप्त कर स्वर्ण पदक – फर्स्ट प्राइज जीता।

पार्थ वर्तक (द्वितीय वर्ष, बी.टेक. कंप्यूटर साइंस, IIT बॉम्बे) ने 57 अंक, विश्व रैंक 86 से 92 प्राप्त कर स्वर्ण पदक ङ्क फर्स्ट प्राइज अर्जित किया।

निरव भट्टड़ (चतुर्थ वर्ष, बी.एस. गणित, IIT बॉम्बे) ने 55 अंक, विश्व रैंक 97 से 102 प्राप्त कर रजत पदक ङ्क सेकंड प्राइज हासिल किया।

भारतीय टीम का नेतृत्व दो प्रतिष्ठित गणितज्ञों ने किया

डॉ. विनय आचार्य – एसोसिएट प्रोफेसर, गणित विभाग, फर्ग्यूसन कॉलेज (स्वायत्त), पुणे तथा ट्रस्टी, भास्कराचार्य प्रतिष्ठान।

डॉ. उदयन प्रजापति – एसोसिएट प्रोफेसर, सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज (स्वायत्त), अहमदाबाद तथा ट्रस्टी, गुजरात गणित मंडल।

भारतीय दल की भागीदारी का संपूर्ण वित्तीय सहयोग भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत कार्यरत नेशनल बोर्ड फॉर हायर मैथमेटिक्स (NBHM) द्वारा प्रदान किया गया। यह संस्था देश में उच्च गणित के विकास और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय अवसर उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

यह उपलब्धि केवल चार विद्यार्थियों की सफलता नहीं, बल्कि भारत की उच्च शिक्षा, गणितीय अनुसंधान और वैज्ञानिक प्रतिभा की वैश्विक पहचान का प्रतीक है। विशेष रूप से IIT बॉम्बे और इंडियन स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट के विद्यार्थियों ने एक बार फिर विश्व मंच पर भारत की बौद्धिक क्षमता का परिचय दिया है।

देश के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा यह उपलब्धि भारत के विद्यालयों और महाविद्यालयों में अध्ययनरत गणितप्रेमी विद्यार्थियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है। यदि विद्यार्थी प्रारम्भ से ही गणित में रुचि विकसित करें, नियमित अभ्यास करें तथा गणित ओलम्पियाड और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लें, तो वे भी भविष्य में भारत का प्रतिनिधित्व कर विश्व स्तर पर देश का नाम रोशन कर सकते हैं।

शिक्षकों, अभिभावकों और शैक्षणिक संस्थानों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को ऐसी प्रतियोगिताओं के प्रति जागरूक करें और उन्हें प्रोत्साहित करें। भारत में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है; आवश्यकता केवल सही मार्गदर्शन, निरंतर परिश्रम और उच्च लक्ष्य निर्धारित करने की है।

कार-बंगले वाले, ज़मीन के मालिक और कंपनी डायरेक्टर बन गए नकली गरीब

एजेंसी - गांधीनगर,

विकास और खुशहाली का दावा करने के बावजूद, गुजरात में सरकारी योजनाओं में लालफीताशाही और गड़बड़ियाँ देखने को मिल रही हैं। चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत सिर्फ गरीबों और जरूरतमंदों के लिए आरक्षित मुफ्त अनाज का फायदा राज्य के अमीर और संपन्न लोगों ने उठाया है। केंद्रीय खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग ने खुद खुलासा किया है कि पिछले तीन वर्षों में गुजरात से 55.09 लाख संदिग्ध राशन कार्ड मिले हैं। अहम बात यह है कि अमीर परिवार भी प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत राशन कार्ड बनवाकर गरीब लाभार्थियों की श्रेणी में शामिल हो गए थे। जिनके पास आलीशान बंगले, महंगी कारें, खेती योग्य ज़मीन है और जो नियमित रूप से इनकम टैक्स भरते हैं, उनके अलावा कंपनी डायरेक्टर भी गरीब बनकर मुफ्त अनाज ले रहे थे। ऐसे अमीर लोगों के घरों तक अनाज पहुँचाने का यह घोटाला सरकारी सिस्टम पर कई सवाल खड़े करता है। केंद्रीय नागरिक आपूर्ति विभाग ने राज्यसभा में जानकारी दी है कि केंद्रीय एजेंसियों ने इनकम टैक्स विभाग, कृषि मंत्रालय, गृह मंत्रालय, डाक विभाग और ऋञ्जह्र से जुड़ा हुआ डेटा हासिल किया था। इस सारे डेटा की क्रॉस-वेरिफिकेशन (जांच-पड़ताल) में अमीरों की करतूत पकड़ी गई और फर्जी लाभार्थियों का पर्दाफाश हुआ।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, पिछले तीन वर्षों में गुजरात में 15.58 लाख फर्जी राशन कार्ड रद्द किए गए हैं। लेकिन सवाल यह है कि अब तक 15 लाख फर्जी कार्ड धारकों के नाम पर हजारों टन अनाज कौन ले गया? किसकी शह पर फर्जी राशन कार्ड बनाए गए? कौन से सरकारी अधिकारी इसमें मिले हुए थे? सरकार ने राशन कार्डों की ठीक से जांच किए बिना ही हजारों टन अनाज बांट दिया। अब जब लाखों फर्जी राशन कार्ड होने का खुलासा हुआ है, तो खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग खामोश हो गया है।

स्पेस में भारत की नई उड़ान

भारत के पहले मिशन के दौरान, थुंबा रॉकेट लॉन्च स्टेशन पर कोई बिल्डिंग नहीं थी। उस समय, प्रोजेक्ट डायरेक्टर का ऑफिस एक लोकल घर में और कंट्रोल रूम एक चर्च की बिल्डिंग में बनाया गया था। रॉकेट के पार्ट्स और दूसरे इक्विपमेंट को बैलगाड़ी और साइकिल पर लॉन्च साइट पर लाया जाता था। कभी अपने सैटेलाइट लॉन्च करने के लिए दूसरे देशों की मेहरबानी पर निर्भर रहने वाला भारत अब स्पेस में सैटेलाइट भेजकर दुनिया भर के देशों की मदद कर रहा है। ढ्ढस्ह्र अब दुनिया में सबसे सस्ते रेट पर लॉन्च करने वाली ऑर्गनाइज़ेशन के तौर पर जाना जाता है, इसलिए दुनिया भर के देश अपने सैटेलाइट भारत के ढ्ढस्ह्र से लॉन्च करवा रहे हैं। आज अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन समेत कई देश अपने सैटेलाइट लॉन्च करने के लिए भारत के ढ्ढस्ह्र से कॉन्टैक्ट कर रहे हैं। ढ्ढस्ह्र ने अपने पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (क्कस्रुङ्क) के ज़रिए 34 देशों के 345 सैटेलाइट लॉन्च किए हैं और लगभग 1100 करोड़ भारतीय रुपये कमाए हैं, जिनकी कीमत 560 मिलियन स्न डॉलर और 220 मिलियन यूरो है। 18 नवंबर, 2022 भारत के लिए एक ऐतिहासिक दिन साबित हुआ। इस दिन भारत ने अंतरिक्ष में हनुमान जैसी छलांग लगाकर एक नए युग में कदम रखा था। इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइज़ेशन (ISRO) ने देश का पहला प्राइवेट रॉकेट विक्रम-स लॉन्च किया। इस रॉकेट ने तीन सैटेलाइट को अपनी ऑर्बिट में स्थापित किया, जिसमें एक विदेशी सैटेलाइट भी शामिल है। भारत के लिए यह गर्व की बात है कि इस लॉन्च के बाद भारत अमेरिका, रूस, श्व, जापान, चीन और फ्रांस जैसे देशों के क्लब में शामिल हो गया है, जो प्राइवेट कंपनियों के रॉकेट को अंतरिक्ष में भेजने में सक्षम हैं। विक्रम-स रॉकेट को हैदराबाद की स्काईरूट एयरोस्पेस कंपनी ने बनाया है। कार्बन फाइबर से बने इस रॉकेट में ३ष्ठ प्रिंटेड इंजन लगे हैं। यह 83 द्मद्द पेलोड, यानी एक सैटेलाइट को 100 द्मद्व की ऊंचाई तक ले जाने में सक्षम है और आवाज़ की स्पीड से पांच गुना ज़्यादा तेज़ी से उड़ सकता है। पाठकों को बता दें कि विक्रम-स का नाम भारत के महान वैज्ञानिक और ढ्ढस्ह्र के संस्थापक डॉ. विक्रम साराभाई के नाम पर रखा गया है और चूंकि इस रॉकेट के लॉन्च से देश के स्पेस प्रोग्राम में प्राइवेट सेक्टर के युग की शुरुआत हुई, इसलिए इस मिशन का नाम प्रमुख रखा गया। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, इस लॉन्च के बाद, अलग-अलग ताकत और वज़न ले जाने में सक्षम रॉकेट बनाने वाली प्राइवेट कंपनियों को इंसेंटिव मिलेगा। यहां यह बताना ज़रूरी है कि देश में स्पेस सेक्टर में प्राइवेट सेक्टर के लिए दरवाज़े 2020 से ही खोल दिए गए थे। सरकार चाहती है कि छोटे मिशन का जो बोझ अभी ढ्ढस्ह्र पर है, उसे प्राइवेट सेक्टर के साथ पार्टनरशिप में उन्हें दिया जाए, ताकि ढ्ढस्ह्र अपने बड़े मिशन पर फोकस कर सके। इससे देश का कमर्शियल मार्केट भी बढ़ेगा, जिसका सीधा फ़ायदा स्पेस मार्केट को होगा। इसके लिए भारत सरकार ने नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथराइज़ेशन सेंटर बनाने का भी फ़ैसला किया है, जिसके ज़रिए देश की इंडस्ट्री न सिर्फ़ स्पेस इकॉनमी में हिस्सा लेगी, बल्कि देश की स्पेस टेक्नोलॉजी को भी एक नई एनर्जी देगी। आज़ादी के बाद देश के पास बेसिक सुविधाओं का स्ट्रक्चर भी नहीं था। ऐसे में स्पेस सेक्टर में कामयाबी पाने का ख्याल एक सपने जैसा था। उस समय डॉ. विक्रम साराभाई ने इस सपने को पूरा करने की पहल की थी। जब भारत का स्पेस सफ़र शुरू हुआ, तो अमेरिका और रूस जैसे देश इस फ़ील्ड में कामयाबी के झंडे गाड़ चुके थे। हमारे पास न तो लॉन्च की सुविधाएँ थीं और न ही बेसिक इंफ्रास्ट्रक्चर। अगर था भी, तो बस दुनिया को दिखाने का रिकॉर्ड तोड़ने वाला जोश था। भारत के पहले मिशन के समय थुम्बा रॉकेट लॉन्च स्टेशन पर कोई बिल्डिंग नहीं थी। उस समय प्रोजेक्ट डायरेक्टर का ऑफ़िस एक लोकल घर में और कंट्रोल रूम एक चर्च की बिल्डिंग में बना था। रॉकेट के पार्ट्स और दूसरे इक्विपमेंट बैलगाड़ी और साइकिल पर लॉन्च साइट पर लाए जाते थे। थुम्बा में स्पेस की दुनिया में अपने पहले कदम रखने वाले भारत ने इस फ़ील्ड में कई रिकॉर्ड तोड़ने वाली कामयाबी हासिल की हैं। आज ढ्ढस्ह्र सैटेलाइट बनाने और लॉन्च करने वाली दुनिया की टॉप ऑर्गनाइज़ेशन के तौर पर अपना नाम बना रहा है। हम अपनी ज़रूरतों के साथ-साथ दूसरे देशों के लिए भी सैटेलाइट बना और लॉन्च कर रहे हैं।

यूनियन ऑफ़ कंसर्न्ड साइंटिस्ट्स सैटेलाइट डेटाबेस ने दुनिया के उन देशों की लिस्ट बनाई है जिन्होंने स्पेस में कामयाबी हासिल की है। रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका के 1,308 उपग्रह अंतरिक्ष में हैं, इसके बाद चीन के 356, रूस के 167, जापान के 78 और भारत के 58 उपग्रह हैं। आर्यभट्ट विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान में एरीज़ साइंस पॉपुलराइज़ेशन एंड आउटरीच प्रोग्राम के एयरपर्सन शशिभूषण पांडे का कहना है कि पिछले कुछ दशकों में अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत का योगदान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत महत्वपूर्ण रहा है। इसरो कई आयामों में अनुसंधान कर रहा है। खगोल विज्ञान के माध्यम से, हम अंतरिक्ष और गहरे अंतरिक्ष का अध्ययन करने में सक्षम हुए हैं। 2015 में, इसरो ने एस्ट्रोसैट नामक एक खगोलीय वेधशाला स्थापित की। 16 नवंबर, 2013 अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक दिन था। इस दिन, 2.39 मिनट पर, PSLV C-25 ऑर्बिटर (मंगलयान) की अंतरिक्ष यात्रा आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से शुरू हुई। 24 सितंबर 2014 को मंगल ग्रह पर पहुंचने के साथ ही भारत न सिर्फ दुनिया का पहला ऐसा देश बन गया जिसने पहली ही कोशिश में इस तरह के मिशन में कामयाबी हासिल की, बल्कि रूस, NASA (अमेरिका) और यूरोपियन स्पेस एजेंसी के बाद ऐसा मिशन पूरा करने वाला दुनिया का चौथा देश भी बन गया। यह ध्यान देने वाली बात है कि भारत का मंगल मिशन सबसे सस्ता भी था।

इस मिशन पर 69 मिलियन डॉलर यानी 450 करोड़ रुपये का खर्च आया, जो नासा के पहले मंगल मिशन का दसवां हिस्सा और चीन व जापान के असफल मंगल मिशन का चौथाई है। कभी अपने सैटेलाइट लॉन्च करने के लिए दूसरे देशों के रहम पर निर्भर रहने वाला भारत अब दुनिया भर के देशों को अंतरिक्ष में सैटेलाइट लॉन्च करने में मदद कर रहा है। 15 फरवरी 2017 को इसरो ने 96 अमेरिकी सैटेलाइट समेत 104 सैटेलाइट सफलतापूर्वक लॉन्च कर इतिहास रच दिया। एक साथ इतने सैटेलाइट सफलतापूर्वक लॉन्च करने वाला भारत दुनिया का पहला देश है। इससे पहले यह रिकॉर्ड रूस के नाम था, जिसने 2014 में एक साथ 37 सैटेलाइट अंतरिक्ष में लॉन्च किए थे। इसरो इस समय दुनिया में सबसे सस्ती दर पर लॉन्च करने वाली संस्था के तौर पर जाना जाता है, जिसके चलते दुनिया के देश अपने सैटेलाइट भारत-इसरो से लॉन्च करवा रहे हैं। आज अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन समेत कई देश भारत के मुकाबले अपने सैटेलाइट लॉन्च करने की कतार में हैं। भारत ने अब तक अमेरिका के 143, कनाडा के 12, ब्रिटेन के 12, जर्मनी के 9, सिंगापुर के 8 समेत कई अन्य देशों के उपग्रहों को अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया है। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की नींव को समझने के लिए हमें 1960 के दशक में जाना होगा। भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के जनक डॉ. विक्रम साराभाई ने अंतरिक्ष अनुसंधान की कल्पना उस समय की थी, जब देश मूलभूत सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहा था। डॉ. साराभाई का स्पष्ट मानना ??था कि यदि भारत जैसा विकासशील देश दुनिया में अव्वल आना चाहता है तो उसे आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल आम आदमी और समाज के उत्थान के लिए करना होगा। 21 नवंबर 1963 को भारत ने थुंबा (केरल) के तट पर स्थित सेंट मैरी मैग्डलीन चर्च के एक पुजारी के घर को कार्यालय और एक नारियल के पेड़ को लॉन्च पैड के रूप में परिवर्तित करके अपना पहला छोटा साउंडिंग रॉकेट लॉन्च किया डॉ. साराभाई की अथक कोशिशों और दूर की सोच की वजह से 15 अगस्त 1969 को इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइज़ेशन की स्थापना हुई।

कम बजट के बावजूद ISRO ने अपने 6 दशक के इतिहास में कमाल की कामयाबी हासिल की है। 1975 में रूस की मदद से भारत का पहला सैटेलाइट आर्यभट्ट लॉन्च किया गया था। उसके बाद ISRO ने अपने रॉकेट SLV, ASLV और बाद में PSLV बनाए, जो दुनिया में सबसे भरोसेमंद माने जाते हैं, और भारी सैटेलाइट के लिए GSLVĐ चाहे एक ही मिशन में 104 सैटेलाइट लॉन्च करने का वर्ल्ड रिकॉर्ड हो, पहली कोशिश में मंगल ग्रह पर पहुंचने का मिशन (मंगलयान), या चांद के साउथ पोल पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला दुनिया का पहला देश बनने का गर्व (चंद्रयान-3), ISRO ने भारत का नाम सुनहरे अक्षरों में लिख दिया है, लेकिन बढ़ते ग्लोबल स्पेस मार्केट को पूरा करने के लिए अब सिर्फ एक सरकारी ऑर्गनाइज़ेशन काफी नहीं है। इसीलिए सरकार ने देश के स्पेस सुधारों के ज़रिए प्राइवेट सेक्टर के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए हैं। 'विक्रम-1', डॉ. साराभाई को सच्ची श्रद्धांजलि, ISRO और इन-स्पेस के सहयोग से, भारत के प्राइवेट सेक्टर ने अब सैटेलाइट बनाने से लेकर स्पेस में रॉकेट लॉन्च करने तक की सारी काबिलियत हासिल कर ली है। इस नई क्रांति का सबसे बड़ा सबूत जल्द ही देखने को मिलेगा, जब हैदराबाद के स्पेस स्टार्टअप स्काईरूट एयरोस्पेस का पूरी तरह से प्राइवेट तौर पर बनाया गया ऑर्बिटल रॉकेट 'विक्रम-1', सैटेलाइट को पृथ्वी की ऑर्बिट में भेजने के लिए उड़ान भरेगा।

रॉकेट सीरीज़ का नाम डॉ. विक्रम साराभाई के सम्मान में 'विक्रम' रखा गया है। मिशन का नाम 'मिशन आगमन' रखा गया है। इसका लॉन्च विंडो 12 जुलाई से 4 अगस्त, 2026 के लिए तय किया गया है, जो श्रीहरिकोटा के ऐतिहासिक फर्स्ट लॉन्च पैड से उड़ान भरेगा, वही लॉन्च पैड जहाँ से ISRO ने अपने शुरुआती मिशन लॉन्च किए थे।

विक्रम-1 की खास टेक्निकल बातें...

रॉकेट सात मंज़िला ऊँचा है और इसका पूरा स्ट्रक्चर स्टेट-ऑफ़-द-आर्ट ऑल-कार्बन कम्पोजिट मटीरियल से बना है, जो इसे बहुत हल्का और मज़बूत बनाता है। रॉकेट के लिक्विड अपर स्टेज में इन-हाउस डेवलप किया गया ३ष्ठ-प्रिंटेड रमन इंजन इस्तेमाल होता है, जिसका नाम सर सी. वी. रमन के नाम पर रखा गया है। इसे 350 किलोग्राम तक वज़न वाले छोटे सैटेलाइट को 450 किलोमीटर की ऊंचाई पर लो अर्थ ऑर्बिट में सही जगह पर पहुंचाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

* ऑटोनॉमस ब्रेन

इस रॉकेट में रामानुजन नाम का एक यूनिक मिशन कंप्यूटर है, जो बिना किसी मैनुअल दखल के उड़ान के दौरान खुद से फैसले लेता है। अभी, भारत में 350 से ज़्यादा स्पेस टेक स्टार्टअप नए काम कर रहे हैं, जैसे...

* अग्निकुल कॉसमॉस- IIT मद्रास के इस स्टार्टअप ने दुनिया का पहला सिंगल-पीस ३ष्ठ प्रिंटेड सेमी-क्रायोजेनिक इंजन अग्निलेट बनाकर इतिहास रच दिया है।

* पिक्सेल- यह कंपनी एडवांस्ड हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग सैटेलाइट के फील्ड में ग्लोबल लीडर बन रही है, जो पृथ्वी के एनवायरनमेंट की सही तस्वीरें देती है। Gala&yEye: इस स्टार्टअप ने अपना Drasht सैटेलाइट लॉन्च किया है, जो मल्टी-सेंसर टेक्नोलॉजी से लैस है और बादल वाले मौसम या रात में भी पृथ्वी की साफ़ तस्वीरें ले सकता है।

* Dhruv Space: यह कंपनी सैटेलाइट डिप्लॉयर और कस्टमाइज़्ड सैटेलाइट प्लेटफ़ॉर्म बनाने में सबसे आगे है। ग्लोबल स्पेस इकॉनमी अभी लगभग 500 बिलियन की है। भारतीय स्पेस सेक्टर का लक्ष्य 2033 तक अपना ग्लोबल शेयर 44 बिलियन (लगभग Rs 3.6 लाख करोड़) के मार्केट साइज़ तक बढ़ाना है। इस सेक्टर में घरेलू और इंटरनेशनल, दोनों तरह से बिज़नेस के मौकों में भारी बढ़ोतरी हुई है। कम्युनिकेशन और पृथ्वी की निगरानी के लिए दुनिया भर में हज़ारों छोटे-सैटेलाइट लॉन्च के लिए तैयार हैं। SpaceX जैसी बड़ी ग्लोबल कंपनियाँ सैटेलाइट लॉन्च करने के लिए बड़े रॉकेट पर निर्भर हैं।

दक्षिण गुजरात के किसानों की मदद के लिए आगे आया कृषि विज्ञान

ब्यूरो रिपोर्ट - जे. बी. टांक, पत्रकार, गुजरात

भारी बारिश में बागवानी के पेड़ गिर गए हैं? अब निराश होने की जरूरत नहीं

यदि पेड़ों की जड़ें मिट्टी से जुड़ी हुई हैं, तो वैज्ञानिक तकनीक और उचित देखभाल से उन्हें फिर से जीवित किया जा सकता है।

गिरे हुए बागवानी फसलों के पेड़ों को दोबारा खड़ा करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों की टीमें किसानों के खेतों में जाकर प्रत्यक्ष प्रशिक्षण दे रही हैं।

'ताऊते' चक्रवात में मेरे बगीचे के गिरे हुए आम के 70 से 80 प्रतिशत पेड़ वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन से फिर से जीवित हो गए ङ्क किसान श्री मोहनभाई पटेल (गांव-घेज, तहसील-चिखली, जिला-नवसारी)।

दक्षिण गुजरात में प्राकृतिक आपदा और भारी वर्षा के कारण हरे-भरे बागानों में वर्षों की मेहनत से तैयार किए गए बागवानी पौधे और पेड़ धराशायी हो गए हैं, जिससे किसान चिंतित हैं। लेकिन इस कठिन समय में किसानों को निराश होने की आवश्यकता नहीं है। यदि गिरे हुए या झुके हुए पेड़ों की जड़ें अभी भी मिट्टी से जुड़ी हुई हैं, तो वैज्ञानिक तरीकों और उचित देखभाल के माध्यम से उन्हें पुनर्जीवित किया जा सकता है। किसानों की वर्षों की मेहनत व्यर्थ न जाए, इसके लिए राज्य सरकार और कृषि विज्ञान तत्काल किसानों की सहायता के लिए आगे आए हैं।

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार, यदि गिरे हुए पौधों या झुके हुए पेड़ों की जड़ें अभी भी मिट्टी से जुड़ी हुई हैं, तो वैज्ञानिक विधियों से उन्हें पुनर्जीवित किया जा सकता है। इसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए कृषि मंत्री श्री जीतुभाई वाघाणी ने बागवानी विभाग के अधिकारियों और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को प्रभावित गांवों का तत्काल दौरा कर किसानों को इन पौधों को पुनर्जीवित करने का प्रत्यक्ष प्रशिक्षण देने के निर्देश दिए हैं।

कृषि मंत्री के निर्देश के बाद पानी पूरी तरह उतरने का इंतजार किए बिना, पिछले शुक्रवार से लगातार बारिश के बीच भी बागवानी विभाग और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय की संयुक्त टीमें किसानों के खेतों तक पहुंच रही हैं। वर्तमान में वलसाड, नवसारी, सूरत, डांग और तापी जिलों के प्रभावित गांवों में वैज्ञानिक प्रत्यक्ष प्रदर्शन (डेमोंस्ट्रेशन) के माध्यम से किसानों को गिरे हुए पेड़ों को पुनर्जीवित करने और उनकी देखभाल का प्रशिक्षण दे रहे हैं।

नवसारी जिले के घेज गांव के प्रगतिशील किसान मोहनभाई पटेल ने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि ताऊते चक्रवात के दौरान उनके बगीचे में कई छोटे-बड़े आम के पेड़ गिर गए थे। उस समय बागवानी विभाग और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में उन्होंने इन पेड़ों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप 70 से 80 प्रतिशत पेड़ दोबारा खड़े हो गए। आज यह पहचानना भी मुश्किल है कि कौन-से पेड़ कभी गिर गए थे।

उन्होंने कहा कि यदि किसान बाढ़ या चक्रवात से हार मानने के बजाय इस वैज्ञानिक पद्धति को अपनाएं, तो वर्षों की मेहनत से तैयार किए गए बागवानी पेड़ों को निश्चित रूप से बचाया जा सकता है।

नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के सह-अनुसंधान वैज्ञानिक डॉ. अंकुर पटेल ने किसानों के लिए चार चरणों वाली सरल वैज्ञानिक विधि बताई है

1. बारिश में गिरे हुए पौधों को कैसे खड़ा करें?

गिरे हुए पौधों को अचानक या जोर लगाकर खड़ा करने की कोशिश न करें, क्योंकि इससे जड़ें टूट सकती हैं। पौधे को धीरे-धीरे उठाएं, थोड़ा उठाने के बाद लगभग 10 सेकंड का विराम लें और फिर दोबारा प्रयास करें।

2. शाखाओं की छंटाई (प्रूनिंग)

बाढ़ के कारण पेड़ को नुकसान पहुंचता है, इसलिए उसके भोजन की आवश्यकता कम करना जरूरी है। इसके लिए लंबी और झुकी हुई शाखाओं को काट दें तथा केवल सीमित पत्तियां रहने दें। किसान चिंता न करें, क्योंकि कटाई के बाद जल्द ही नई शाखाएं निकल आएंगी।

3. फफूंदनाशक पेस्ट का उपयोग

जहां शाखाएं काटी गई हों, वहां कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC) की पेस्ट लगाएं। इसमें मौजूद तत्व घाव को सड़ने से बचाता है और नई शाखाएं निकलने में सहायता करता है।

4. मिट्टी और जड़ों का उपचार (ड्रेंचिंग)

* वर्षा के मौसम में गोबर की खाद का उपयोग न करें। इसके स्थान पर 1 किलोग्राम वर्मी कम्पोस्ट में 50 ग्राम कार्बेन्डाजिम पाउडर मिलाएं। इस मिश्रण को 4ङ्क5 दिनों तक पलटते रहें और फिर पेड़ के आसपास मिट्टी खोदकर डाल दें।

* जड़ों को सड़ने से बचाने के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडी का ड्रेंचिंग करें। 200 लीटर पानी में 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा और 2 किलोग्राम यूरिया मिलाएं। यूरिया मिलाने से पौधे ट्राइकोडर्मा को जल्दी अवशोषित करते हैं। प्रत्येक पौधे को लगभग 1 लीटर यह घोल दें और महीने में 2ङ्क3 बार यह प्रक्रिया दोहराएं।

भारी बारिश में बागवानी फसलों को नुकसान से कैसे बचाएं?

नवसारी कृषि विश्वविद्यालय के सह-अनुसंधान वैज्ञानिक के अनुसार, मानसून से पहले नदी या नाले के पानी के बहाव की दिशा को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक पौधे के चारों ओर कम से कम दो फीट ऊंचा मेड़ (बांध) बनाना चाहिए। इससे तेज बहाव के दौरान पौधों को सहारा मिलता है और वे गिरने से बच जाते हैं।

नारी वंदन उत्सव-2026 के अंतर्गत बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ दिवस के अवसर पर 181 अभयम महिला हेल्पलाइन टीम द्वारा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

ब्यूरो रिपोर्ट
जे. बी. टांक, पत्रकार, सूरत,

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के संदेश के साथ सूरत के देवकी नंदन हिंदी विद्यालय, पांडेसरा में छात्र-छात्राओं को बालिका शिक्षा, महिला सुरक्षा एवं महिला सशक्तिकरण के बारे में मार्गदर्शन दिया गया।

नारी वंदन उत्सव-2026 के अंतर्गत बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ दिवस के अवसर पर 181 अभयम महिला हेल्पलाइन टीम द्वारा सूरत शहर के उमरा क्षेत्र के अंतर्गत देवकी नंदन हिंदी विद्यालय, पांडेसरा में विद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेशभाई के नेतृत्व में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं के जन्म, सुरक्षा, शिक्षा एवं सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं को बताया गया कि बालिकाओं को समान अधिकार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा सुरक्षित वातावरण उपलब्ध हो,

ताकि वे आत्मविश्वास के साथ जीवन में आगे बढ़ें और समाज के विकास में समान भागीदारी निभा सकें। समाज में इसी उद्देश्य से व्यापक जागरूकता फैलाने का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम के दौरान 181 अभयम महिला हेल्पलाइन टीम द्वारा घरेलू हिंसा, छेड़छाड़, शोषण, साइबर अपराध सहित विभिन्न आपात परिस्थितियों में उपलब्ध 24म7 नि:शुल्क आपातकालीन सहायता सेवाओं, काउंसेलिंग, पुलिस सहायता, कानूनी सहायता तथा अन्य आवश्यक सेवाओं की विस्तृत जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान की गई।

विद्यार्थियों से महिला सुरक्षा के प्रति जागरूक रहने, अपने अधिकारों की जानकारी रखने तथा आवश्यकता पड़ने पर बिना किसी संकोच के 181 अभयम महिला हेल्पलाइन की सेवाओं का उपयोग करने का आग्रह किया गया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रम में भाग लिया तथा बेटी बचाओ,

बेटी पढ़ाओ अभियान के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने और महिला सशक्तिकरण के लिए सदैव जागरूक रहने का संकल्प लिया।

इस जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से 181 अभयम महिला हेल्पलाइन टीम ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के उद्देश्यों को और अधिक सशक्त बनाने के साथ-साथ विद्यार्थियों में बालिका शिक्षा,

महिला सुरक्षा एवं महिला सशक्तिकरण के प्रति प्रभावी जागरूकता का प्रसार किया।

सिविल अस्पताल में 'अंगदान महादान' अभियान के अंतर्गत विधायक संगीताबेन पाटिल के हाथों सफाई कर्मियों, नर्सिंग एवं सुरक्षा स्टाफ को 'अंगदान महादान' अंकित छतरियों का वितरण

ब्यूरो रिपोर्ट -जे. बी. टांक, पत्रकार, सूरत,

अंगदान जनजागरूकता अभियान को और अधिक गति देने तथा 'अंगदान दिवस' के अवसर पर सिविल अस्पताल में 'अंगदान महादान' अभियान के प्रणेता श्री दिलीपभाई देशमुख के अंगदान चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा विधायक श्रीमती संगीताबेन पाटिल की उपस्थिति में सफाई कर्मियों, नर्सिंग एवं सुरक्षा स्टाफ को 'अंगदान महादान' अंकित छतरियों का वितरण किया गया। इस अवसर पर अंगदान सेवा कार्य में उत्कृष्ट योगदान देने वाले चिकित्सा कर्मियों का सम्मान भी किया गया। साथ ही नर्सिंग विद्यार्थियों द्वारा अंगदान का संदेश देने वाले पोस्टरों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

सिविल अस्पताल के किडनी बिल्डिंग में नर्सिंग कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा अंगदान जागरूकता से संबंधित विशेष पोस्टरों तथा सेनेटरी इंस्पेक्टर द्वारा बनाई गई रंगोली प्रदर्शनी का उद्घाटन विधायक श्रीमती संगीताबेन पाटिल ने किया और विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना की।

विधायक संगीताबेन पाटिल ने कहा कि अंगदान मानवता का ऐसा महादान है, जो एक व्यक्ति के निधन के बाद भी अनेक लोगों को नया जीवन प्रदान करता है। गुजरात आज अंगदान के क्षेत्र में अग्रणी राज्यों में शामिल है। जीवनदान देने की इस महान सेवा में सूरत सिविल अस्पताल हमेशा अग्रणी रहा है। नई सिविल अस्पताल द्वारा चलाए जा रहे अंगदान जनजागरूकता अभियान से समाज में अंगदान के प्रति सकारात्मक सोच विकसित होगी।

उन्होंने आगे कहा कि आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं तथा अंग प्रत्यारोपण (ऑर्गन ट्रांसप्लांटेशन) के क्षेत्र में हुई प्रगति के कारण आज अनेक मरीजों को नया जीवन मिलने की आशा जगी है। ऐसे समय में हम सभी का दायित्व है कि अंगदान से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करें, अधिक से अधिक जनजागरूकता फैलाएं तथा ऐसा समाज बनाएं जहाँ किसी भी मरीज को अंग की प्रतीक्षा में जीवन से वंचित न रहना पड़े।

चिकित्सा अधीक्षक डॉ. पारूल वडगामा ने सिविल अस्पताल में हुए अंगदान की जानकारी देते हुए बताया कि अब तक कुल 104 पंजीकृत मरीजों में से 96 सफल अंगदाताओं से 316 अंगों का सफल दान प्राप्त हुआ है। इनमें 34 नेत्र, 75 लिवर, 166 किडनी, 9 हाथ, 2 पैंक्रियास (अग्न्याशय), 6 छोटी आंतें, 11 हृदय, 12 फेफड़े तथा RAFF (Radial Forearm Flap) शामिल हैं। इन सफल अंगदानों के माध्यम से अनेक जरूरतमंद मरीजों को नया जीवन मिला है। उन्होंने कहा कि नई सिविल अस्पताल का प्रयास है कि ब्रेन-डेड मरीजों के मामलों में अधिक से अधिक अंगदान को प्रोत्साहित किया जाए।

TNAI (Trained Nurses Association of India) के सचिव इकबाल कड़ीवाला ने कहा कि ब्रेन-डेड मरीजों के परिजनों को अंगदान के महत्व के बारे में समझाना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि एक अंगदान अनेक जरूरतमंद लोगों के जीवन में नई रोशनी ला सकता है। नर्सिंग स्टाफ और नर्सिंग विद्यार्थियों द्वारा अंगदान जनजागरूकता अभियान को जन-जन तक पहुँचाना ही सच्ची मानव सेवा है।

समाज में अंगदान के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने के उद्देश्य से उपस्थित सभी सफाई कर्मियों तथा चिकित्सा एवं नर्सिंग स्टाफ ने अंगदान का संकल्प (शपथ) लिया। इस अवसर पर विधायक संगीताबेन पाटिल, नगरसेवक ब्रजेश उनडकट, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. पारूल वडगामा, डीन डॉ. जयेश ब्रह्मभट्ट, डॉ. लक्ष्मण टहलानी, डॉ. भरत चावड़ा, TNAI के सचिव इकबाल कड़ीवाला, सरकारी नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्य डॉ. इन्द्रावती राव, सहायक नर्सिंग अधीक्षक सरस्वतीबेन मैसूरिया, प्रज्ञाबेन पटेल, अंगदान चैरिटेबल ट्रस्ट के स्वयंसेवक मकरंद जोशी, नर्सिंग एसोसिएशन के निलेश लाठिया एवं जगदीश बुहा, संजय परमार, बिपिनभाई, विभोर चुग सहित विभिन्न विभागों के प्रमुख, हेड नर्स, बड़ी संख्या में चिकित्सक तथा स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

समरसता संकल्प अभियान के तहत गांधीनगर ज़िले और गांधीनगर महानगर में काशी से कर्णावती कलश यात्रा का भव्य स्वागत किया गया

गांधीनगर । प्रतिनिधि द्वारा

गुजरात प्रदेश बीजेपी मीडिया विभाग की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती के उपलक्ष्य में भारतीय जनता पार्टी गुजरात प्रदेश द्वारा %समरसता संकल्प अभियान% के तहत आयोजित %काशी से कर्णावती% कलश यात्रा का आज गांधीनगर ज़िले और गांधीनगर महानगर में कई जगहों पर नागरिकों, विभिन्न समुदायों के नेताओं और भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया।

इस मौके पर फूलों की वर्षा, तिलक, कलश पूजा और जयघोष के साथ कलश यात्रा का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। विभिन्न समुदायों के नेता और बड़ी संख्या में मौजूद नागरिक कलश यात्रा में शामिल हुए और समाज के हर वर्ग तक सामाजिक समरसता, एकता और भाईचारे का संदेश पहुंचाने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर, उपस्थित सभी लोगों ने संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज के चरणों में नमन किया और उनके प्रति आभार व्यक्त किया। साथ ही, उन्होंने उनके द्वारा दिए गए समानता, मानवता, श्रम की गरिमा, सामाजिक न्याय और समावेशी समाज के आदर्शों को जीवन में उतारने और सामाजिक जीवन में योगदान देने का संकल्प लिया।

गांधीनगर ज़िले में यह कलश यात्रा कलोल शहर, धमासना, सरधाव और रूपाल जैसे इलाकों से गुज़री, जबकि गांधीनगर महानगर क्षेत्र में यात्रा का राखेजा, सेक्टर-14, रिलायंस चौकड़ी और भाट-कोटेश्वर चौकड़ी पर भव्य स्वागत किया गया। हर जगह बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक, महिलाएं, युवा, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि और बीजेपी कार्यकर्ता मौजूद थे और उन्होंने यात्रा का स्वागत किया। इस मौके पर राज्य सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री प्रद्युमनभाई वाजा, राज्य महासचिव श्री अजयभाई ब्रह्मभट्ट, राज्य उपाध्यक्ष और अभियान प्रभारी श्री गौतमभाई गेड़िया, राज्य मंत्री श्री नीरवभाई अमीन,

अभियान की राज्य टीम, गांधीनगर ज़िला भाजपा अध्यक्ष श्री अनिलभाई पटेल, गांधीनगर शहर भाजपा अध्यक्ष डॉ. आशीषकुमार दवे, विधायक, गांधीनगर के मेयर, ज़िला पंचायत अध्यक्ष, संगठन के पदाधिकारी, चुने हुए सदस्य, नेता, गणमान्य व्यक्ति और नागरिक मौजूद थे।

सूरत में निवास करने वाली अमरेली जिले के बाबरा तालुका के गमा पीपळिया गांव की बेटियों द्वारा आयोजित मैयार की मिठास सखी स्नेहमिलन समारोह का आयोजन कान्हावन हेरिटेज पार्टी लॉन, मोटा वराछा, सूरत में बड़े उत्साह के साथ किया गया

ब्यूरो रिपोर्ट – जे. बी. टांक, पत्रकार, सूरत
मो. 9624986108

कार्यक्रम की शुरुआत गांव के अग्रणियों, दानदाताओं, समाज के वरिष्ठजनों तथा गांव की सभी बहनों एवं बेटियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर बोखला हनुमानजी महाराज और मामैया आपा के जयघोष के साथ की गई। गमा पीपळिया गांव का इतिहास भी अत्यंत गौरवशाली है। बताया जाता है कि जूनागढ़ जिले के बिलखा स्टेट के दरबार साहब ने अपनी बहन गमाबाई को यह गांव कपड़ा (दहेज) स्वरूप भेंट किया था। तभी से इस गांव का नाम गमाबाई का पीपळिया पड़ा, जो समय के साथ गमा पीपळिया के नाम से प्रसिद्ध हो गया। उसी गांव की बेटियों का यह सखी स्नेहमिलन समारोह सूरत में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में गमा पीपळिया गांव की बड़ी संख्या में बेटियों और बहनों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति देखने को मिली।

समय के साथ जीवन में अनेक परिवर्तन आते हैं, लेकिन बचपन के मित्रों और अपने गांव से जुड़ी यादें कभी मिटती नहीं हैं। इन्हीं अनमोल यादों को फिर से जीवंत करने के उद्देश्य से मैयार की मिठास नामक इस विशेष सखी स्नेहमिलन का आयोजन किया गया।

इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य बचपन की सहेलियों और गांव की बहनों को एक मंच पर लाकर पुराने दिनों की यादों को ताज़ा करना था। वर्षों बाद एक-दूसरे से मिलना, हंसी-मज़ाक करना, पुरानी यादें साझा करना और आत्मीय भावनाओं का आदान-प्रदान करना सभी के लिए अविस्मरणीय अनुभव बन गया।

गांव की मिट्टी में खेलते हुए जो रिश्ते बने थे, उन्हें समय की आंधियां भी नहीं तोड़ सकीं। उन्हीं रिश्तों को फिर से मजबूत करने और एक दिन के लिए बचपन की खुशियों को दोबारा जीने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न मनोरंजक खेल, गरबा, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, संगीत, समूह चर्चाएं तथा यादगार पलों को कैमरे में कैद करने की विशेष व्यवस्था भी की गई। सभी बहनों का परिवार जैसी आत्मीयता के साथ स्वागत किया गया। आयोजकों ने गांव की सभी बहनों से आग्रह किया कि वे अपने व्यस्त जीवन से कुछ समय निकालकर इस स्नेहमिलन में शामिल हों और बचपन की यादों को एक बार फिर जीवंत बनाकर इस अनोखे आयोजन को सफल बनाएं। कार्यक्रम में

उपस्थित सभी बेटियों के लिए गांव के दानदाता बाबूभाई रामजीभाई मालवीया तथा महेशभाई धीरुभाई कुंभाणी द्वारा भोजन की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर सभी बेटियों ने गमाबाई के समाधि स्थल को संरक्षित एवं विकसित करने का संकल्प भी लिया। समाधि स्थल का सुंदर पुनर्निर्माण कर उसे नया स्वरूप देने के विचार का सभी ने स्वागत किया तथा इसके लिए बेटियों द्वारा एक सम्मानजनक धनराशि भी एकत्रित की गई। आइए मिलें, मुस्कुराएँ, बातें करें और बचपन की यादों की उस खूबसूरत यात्रा को फिर से जीएँ।

किसानों से अपील-अरंडी (कैस्टर) की फसल में रोग एवं कीट प्रबंधन के लिए बुवाई के समय उचित उपाय अपनाएँ

ब्यूरो रिपोर्ट – जे. बी. टांक, पत्रकार, सूरत,

अरंडी की खेती करने वाले किसानों को फसल में रोग एवं कीटों से बचाव के लिए बुवाई के समय आवश्यक सावधानियाँ अपनाने की सलाह आनंद कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा दी गई है।

वैज्ञानिकों के अनुसार, बुवाई से पहले बीजों का फफूंदनाशक दवा से उपचार करना आवश्यक है। प्रति किलोग्राम बीज पर 3 ग्राम थायरम या कार्बेन्डाजिम का उपचार करके ही बुवाई करनी चाहिए।

खेत का चयन सोच-समझकर करें तथा फसल चक्र अपनाएँ। जिस खेत में पिछले दो वर्षों से अरंडी की खेती न हुई हो, उसी खेत का चयन करें। भूमि में पर्याप्त मात्रा में गोबर की खाद, जैविक खाद अथवा हरी खाद का उपयोग करें।

सूखा रोग (विल्ट) के प्रति प्रतिरोधक क्षमता वाली संकर किस्में जैसे रष्ट॥-7, रष्ट॥-8, रष्ट॥-9 तथा रष्ट॥-10 की बुवाई करें। इस रोग के प्रभावी नियंत्रण के लिए मक्का, ज्वार, बाजरा अथवा गेहूँ जैसी फसलों के साथ फसल चक्र अपनाना लाभदायक है। सेमीलूपर (घोड़िया इल्ली) के प्रकोप तथा रासायनिक दवाओं पर होने वाले खर्च को कम करने के लिए अरंडी की बुवाई अगस्त के प्रथम सप्ताह के आसपास करने की सलाह दी गई है।

साथ ही घोड़िया इल्ली एवं कैप्सूल बोरर (डोडवा कोरी खाने वाली इल्ली) के नियंत्रण हेतु दलहनी फसलों को अंतरवर्ती फसल (इंटरक्रॉप) के रूप में लेना चाहिए।

बीजों को बीजामृत से उपचारित कर छाया में सुखाकर ही बुवाई करें। बुवाई के समय प्रति एकड़ 100 किलोग्राम गोबर की खाद तथा 100 किलोग्राम घन जीवामृत मिलाकर खेत में डालें।

जड़ गलन एवं विल्ट रोग के जैविक नियंत्रण के लिए 5 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर को 500 किलोग्राम सरसों या नीम की खली में मिलाकर बुवाई से पूर्व क्यारी/नाली में डालें।

किसानों से आग्रह किया गया है कि किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक का उपयोग करते समय पैकेट अथवा लेबल पर दिए गए निर्देशों के अनुसार ही मात्रा एवं अनुशंसाओं का पालन करें।

अधिक जानकारी के लिए किसान अपने स्थानीय ग्रामसेवक, कृषि विस्तार अधिकारी अथवा जिला कृषि अधिकारी, सूरत से संपर्क कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा, कृषि मंडी शुल्क पर चर्चा उदयपुर में ऑयल एंड सीड्स व्यापारियों ने जताई चिंता

उदयपुर । प्रतिनिधि द्वारा

श्री उदयपुर ऑयल एंड सीड्स मर्चेंट्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने 2 अगस्त 2026 को सुखाडिया रंगमंच पर राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को ज्ञापन सौंपा। इस दौरान व्यापारियों ने कृषि मंडी द्वारा लगाए गए यूजर चार्ज से उत्पन्न समस्याओं से मुख्यमंत्री को अवगत कराया।

एसोसिएशन के उपाध्यक्ष अर्जुन जैन, सचिव अनिल जैन, कोषाध्यक्ष चिराग बंसल, सदस्य रवींद्र, पप्पू एवं रवि के साथ गुजराती समाज के अध्यक्ष राजेश बी मेहता भी उपस्थित रहे। पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री को बताया कि कृषि मंडी द्वारा यूजर चार्ज लगाए जाने से व्यापारियों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

व्यापारियों ने ज्ञापन के माध्यम से अपनी समस्याओं को विस्तार से रखा।

उन्होंने मांग की कि यूजर चार्ज को लेकर मंडी प्रशासन द्वारा लिए जा रहे निर्णयों पर पुनर्विचार किया जाए। व्यापारियों का कहना था कि इस शुल्क से व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है और आर्थिक बोझ बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने ज्ञापन प्राप्त करते हुए व्यापारियों की समस्याओं को गंभीरता से सुना। उन्होंने आश्वासन दिया कि मामला उनके संज्ञान में है और इस पर उचित कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा, 卐आपकी बातों को ध्यान में रखते हुए सरकार आवश्यक कदम उठाएगी।卐

सुखाडिया रंगमंच पर आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ऑयल एंड सीड्स व्यापारियों की उपस्थिति रही। सभी ने एक स्वर में यूजर चार्ज को कम करने या समाप्त करने की मांग की। इस दौरान व्यापारियों ने कहा कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो वे आगे भी अपनी मांगों को लेकर प्रशासन के समक्ष आवाज उठाएंगे।

व्यापारियों ने मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते हुए उम्मीद जताई कि सरकार उनकी समस्याओं का समाधान करेगी। कार्यक्रम के अंत में एसोसिएशन के सदस्यों ने एकजुटता दिखाते हुए कहा कि वे व्यापारियों के हितों की रक्षा के लिए आगे भी प्रयासरत रहेंगे।

इस अवसर पर स्थानीय व्यापारिक समुदाय ने सरकार से शीघ्र सकारात्मक निर्णय की अपेक्षा जताई।

विसावदर माधव क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसाइटी के सदस्यों का मिलन समारोह आयोजित

सी. वी. जोशी विसावदर

विसावदर माधव क्रेडिट को-ऑपरेटिव शाखा पिछले कुछ वर्षों से सदस्यों के साथ परिवार की भावना से काम कर रही है। %संस्कृति के बिना सहयोग नहीं, सहयोग के बिना कल्याण नहीं% की कहावत को मानते हुए, विसावदर शाखा समिति ने सदस्य परिवारों के लिए एक मिलन समारोह आयोजित किया।

सबसे पहले, मंच पर मौजूद गणमान्य व्यक्तियों ने दीप प्रज्वलित किया और फिर गुलदस्ते व स्कार्फ देकर अतिथियों और पत्रकारों का सम्मान किया। इसके बाद, शाखा अध्यक्ष विपुलभाई वेकरिया ने माधव क्रेडिट सोसाइटी शाखा की वार्षिक रिपोर्ट पेश की। साथ ही, यह बताया गया कि यह शाखा जरूरतमंद सदस्यों के लिए कैसे उपयोगी है। इसमें सदस्यों की संख्या, साल भर की गतिविधियां जैसे वृक्षारोपण, बेटी के जन्म और शादी के अवसर पर उपहार के तौर पर स्नष्ठ रसीदें, स्वास्थ्य शिविर, छात्रों को शैक्षिक नोटबुक, व्यापार क्षेत्र में जरूरतमंद सदस्यों को ऋण, शाखा के नियमों और शर्तों के तहत वित्तीय लाभ, गोल्ड लोन, सोलर सिस्टम, निर्धारित मानदंडों के अनुसार ब्याज सहित जमा स्वीकार करना आदि शामिल हैं। यह शाखा कई तरह के सामाजिक कार्यों से भी जुड़ी है।

शाखा के उपाध्यक्ष और विभिन्न संगठनों से जुड़े रमणिकभाई दुघात्रा ने कवितामयी पंक्तियों के माध्यम से अतिथियों का परिचय कराया। यह शाखा ऋण लेने वाले सदस्यों के दस्तावेजों की जांच करती है और उनकी क्षमता के अनुसार ऋण प्रदान करती है। समय-समय पर सफाई कर्मचारियों और विशेष प्रतिभा वाले व्यक्तियों का भी सम्मान किया जाता है।

आज के कार्यक्रम के अध्यक्ष विट्ठलभाई दुधात्रा और मंच पर मौजूद गणमान्य व्यक्तियों ने अपने संबोधन में कहा कि संगठन का मुख्य उद्देश्य समाज में बदलाव लाना है, न कि केवल पैसा कमाना; बल्कि शाखा को एक विशाल वृक्ष बनाना और दूसरों की अधिक से अधिक मदद करना है। पूरा स्टाफ लोगों के लिए उपयोगी काम करने और संगठन को और मजबूत बनाने के इरादे से कड़ी मेहनत कर रहा है, और उन्होंने आग्रह किया कि अधिक से अधिक सदस्य इस शाखा से जुड़ें।

इसके बाद, विसावदर के डॉ.कल्पेश रामोलिया और चिकित्सा क्षेत्र में अध्ययनरत डॉक्टर भाई-बहनों को गुलदस्ते, शॉल और स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। आखिर में, रमणीकभाई दुघात्रा ने अपने शब्दों में ब्रांच के सालाना कामकाज के बारे में बताया, विकास के क्षेत्र से जुड़ी कहानियाँ सुनाईं और सभी को ब्रांच के कामों से अवगत कराया।

इस कार्यक्रम में स्न्ब्रह्र मैनेजर राहुलभाई सोलंकी, सीनियर पत्रकार सी.वी.जोशी, ब्रांच के स्नष्ठ, मंकोडीभाई और रावलभाई, नरेंद्रभाई कोटिला, परसोत्तमभाई पदमाणी, प्रफुलभाई जोशी, मुकेशभाई रिबडिया, श्याम चावड़ा, अमितपुरी गोस्वामी के साथ-साथ बड़ी संख्या में भाई-बहन और बच्चे मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन और धन्यवाद प्रस्ताव ब्रांच मैनेजर हर्षदभाई मुंगलपरा ने किया। आखिर में, सभी ने %वंदे मातरम% का सामूहिक गान किया और नाश्ता करके आभार व्यक्त किया।

मालधारी समुदाय के एक होनहार नौजवान श्री जीतू जमाभाई रबारी ने अपना जन्मदिन अनोखे तरीके से मनाया

रिपोर्ट दिनेश जी ठाकोर, नवसारी,

मालधारी समुदाय के एक होनहार नौजवान श्री जीतू जमाभाई रबारी, जो लगातार गौ सेवा, देशहित और समाजहित के कामों में आगे रहे हैं, ने अपना जन्मदिन अनोखे और सेवाभावी तरीके से मनाया और समाज में एक प्रेरणा देने वाली मिसाल कायम की।

अपने जन्मदिन के मौके पर, उन्होंने श्री पी.एस. कोठारी मूक-बधिर मल्टीपर्पस स्कूल (ममता मंदिर), नवसारी में पढ़ने वाले दिव्यांग बच्चों को प्यार से खाना खिलाया।

इसके अलावा, उन्होंने गाय को चारा खिलाया और पक्षियों को दाना डालकर समाज में दया, करुणा और मानव सेवा का बेहतरीन संदेश दिया।

श्री जीतू जमाभाई रबारी सालों से गौ सेवा, समाज सेवा और देशहित के अलग-अलग कामों में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं और सेवा के कामों से समाज को प्रेरणा देते रहे हैं।

उनके जन्मदिन के इस अनोखे जश्न की समाज के नेताओं, दोस्तों और लोगों ने तारीफ की। इस मौके पर मौजूद लोगों ने उनके अच्छे स्वास्थ्य, लंबी उम्र और लगातार समाज सेवा की कामना की।

84 हज़ार करोड़ रुपये की समुद्र मंथन योजना को मंज़ूरी

एजेंसी – नई दिल्ली,

भारत सरकार ने देश की ऊर्जा सुरक्षा को मज़बूत करने और आयातित कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस पर निर्भरता कम करने के मकसद से 84,084 करोड़ रुपये की समुद्र मंथन नेशनल ऑफशोर एक्सप्लोरेशन स्कीम (राष्ट्रीय अपतटीय अन्वेषण योजना) को मंज़ूरी दी है। इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत, गहरे और बहुत गहरे समुद्री इलाकों में तेल और गैस की खोज के लिए आर्थिक मदद दी जाएगी, जिससे अब तक न खोजे गए भंडारों की ड्रिलिंग संभव हो सकेगी। योजना के अनुसार, सरकार गहरे समुद्र में खोदे गए हर एक्सप्लोरेशन कुएं (खोज वाले कुएं) की ड्रिलिंग लागत का 50 प्रतिशत या अधिकतम 650 करोड़ रुपये – जो भी कम हो – वहन करेगी। अगले पांच वर्षों में कुल 60 गहरे पानी और बहुत गहरे पानी वाले कुओं के लिए बजटीय सहायता दी जाएगी। इसके साथ ही, संयुक्त बुनियादी ढांचे के विकास के लिए भी आंशिक आर्थिक सहायता दी जाएगी। अब तक, ज़्यादा जोखिम और अनिश्चित फायदों के कारण निजी कंपनियां नए खोज प्रोजेक्ट्स से दूर रहती आई हैं। अगर व्यावसायिक रूप से फायदेमंद हाइड्रोकार्बन नहीं मिलते हैं, तो पूरा निवेश नुकसान में बदल जाता है। इसीलिए कंपनियां मुख्य रूप से पहले से खोजे गए इलाकों में उत्पादन पर निवेश करती थीं, जबकि नई खोज गतिविधियां सीमित थीं। इस 84,084 करोड़ रुपये के पैकेज में से 43,200 करोड़ रुपये खास तौर पर गहरे समुद्र में ड्रिलिंग के लिए रखे गए हैं।

Printed / Published /Owned by ILEVAN H. THAKAR on behalf of ILEVAN H. THAKAR and Printed at JAY GRAPHICS AND PRINTERS, C/15, Vikram Chambers, Income Tax, Ashram Raod, Ahmedabad - 380 009.
Published at 1-503, Pramukh Aura, Nr. Pramukh Nagar Bunglows, Pramukh Nagar Road, Kh-0 Road, Sargasan Char Rasta, GANDHINAGAR.(GUI) Editor: ILEVAN H. THAKAR